स्व-परीक्षा के उत्तर

स्व परीक्षा 1

1. क्योंकि वे निश्चित नहीं कि परमेश्वर है या यह कि वह उनकी प्रार्थना सुनता है।
2. "प्रेम में भय नहीं; सिद्ध प्रेम सब भय दूर करता है।"
3. वह एक नया मनुष्य बन जाता है जो बुराई के मार्ग को छोड़ देता है।
4. "प्रभु हमें प्रार्थना करना सिखा।"
5. क्योंकि हम परीक्षा में पड़तें हैं कि लोग हमें प्रार्थना करते देखें।
6. अ लिखित वचन
   ब जीवित पुत्र
   स पवित्रात्मा
7. प्रार्थना, चलना (या जीना), इच्छा
8. ब) प्राकृति परमेश्वर है
9. ब) बार बार परमेश्वर का वचन पढ़ें, उस पर गौर करें, और परमेश्वर से सहायता मांगें कि उसे समझने में सहायता मिले।
10. स) सबसे ऊपर सदा परमेश्वर के राज्य की खोज में रहें।
11. अ 5) ईश्वर को त्यागने वाला
    ब 7) मृतकात्मावादी
    स 2) अविश्वासी
    द 6) सार्वभौमिक
    इ 1) नास्तिक
    फ 4) अंहकारी
    ई 3) बहुईश्वर विश्वास

स्व परीक्षा 2

1. परमेश्वर ऐसे परिवार का पिता होना चाहता था जिसमें पुत्र व पुत्रियां उसे प्यार करें।
2. साहस, नम्रता, गीत गाना, स्तुति और धन्यवाद के साथ। (किसी भी क्रम में)
3. जो उसके पुत्र हैं।
   जो उसके पुत्र नहीं।
4. वह पुत्रों समान प्रार्थना करने में सहायक है वह हमारे लिये विनती करता है।
   वह हमारे द्वारा उठाने के लिये अन्य भाषाओं मे बोला है।
5. ग अपनी विभिन्नताओं के बावजूद सब विश्वासियों को भाई स्वीकारें।
6. अ गलत
   ब सही
   स सही
   द सही
7.

a	P	f	P
b	W	g	P
c	W	h	P,W
d	P	i	W
e	W	j	P

स्व-परीक्षा 3

1. उसकी बातचीत, व्यवहार और प्रार्थना का जीवन

2. स्वर्ग में
3. वे इस संसार के आराम के लिये प्रार्थना नहीं करते थे बल्कि परमेश्वर को प्रसन्न करने व उसकी इच्छा को पूर्ण करने के प्रयत्न में रहते थे।
4. विश्वासी आशा मे कर्राहता है। अविश्वासी का कर्राहना निराशा है।
5. अपनी उपस्थिति से हमें संसार को बेहतर बनाना है।
6. कि वह संसार के प्रेम नहीं करेगा कि वह जगत की ज्योति बनेगा।
7. अ गलत
   ब गलत
   स सही
   द सही

स्व-परीक्षा 4

1. सेवक बगैर प्रेम व आराधना के सेवा कर सकते हैं। पुत्र प्रेम करते हैं, इसलिये आराधना करते हैं।
2. दूसरे देवता प्रेम प्रगट नहीं कर सकते, प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं दे सकते।
3. अहं, काम, लोभ (कोई भी क्रम)
4. उन्होंने अनुसरण किया पौलूस, अप्पोलूस और पतरस का और यीशु का इस प्रकार अपमान किया।
5. खाली सिंहासन कोई चीज़ नहीं – या तो परमेश्वर सिहांसन पर है या शैतान।
6. अपने मनों में परमेश्वर का राजा जैसा सम्मान करें। अपने हृदय सिंहासन से और बातों को दूर रखें। विश्वास करें, यीशु के नाम की सामर्थ में, उसके वायदों को प्राप्त करें। अपने व्यवहार व बोल चाल की रक्षा करें।

स्व-परीक्षा 5

1. एक बाह्य एक आंतरिक राज्य है।
2. अपने धरों में
   अपने काम पर
   मित्रों में
3. मसीह हमारे मध्य है।
4. सदस्यों से बढ़ौतरी होती है। सदस्य मसीह की समानता में बढ़ते हैं।
5. उन तक जाओ।
   शिष्य बनाओ।
   बपतिस्मा दो।
   सिखाओ।
6. हमें एक दूसरे को ज्ञान के द्वारा उत्साहित करना है।
7. मज़दूर फसल को इकट्ठा करें।
8. कि सुसमाचार का प्रचार सारे जगत में किया जायेगा।
9. आराधना के द्वारा।

स्व-परीक्षा 6

1. सब लोग विश्वास करते हैं।
   सब विश्वासी यीशु समान हों।
2. आत्मा परमेश्वर की इच्छानुसार हमारे लिये प्रार्थना करता है।
3. जब हम उसकी इच्छानुसार समर्पित होने से इंकार करते हैं।
4. जब लोग उद्धार से इंकार करते हैं।
5. वे सब पवित्रात्मा से भर गये।
6. सब बातें संभव हैं।
7. चीज़ें जो परमेश्वर की इच्छा नहीं
   चीज़ें जो परमेश्वर की इच्छा हो भी सकती हैं और नहीं भी।
   चीज़ें जो परमेश्वर की इच्छा हैं।

स्व-परीक्षा 7

1. यदि व्यक्ति परमेश्वर की सहायता न चाहे तो वह सहायता नहीं करता।
2. परमेश्वर हमारी ज़रूरतें प्रदान करना चाहता है।
   परमेश्वर के लिये कुछ असंभव नहीं।
3. धन जो स्वार्थी जीवन देता है बहुत कम विश्वासी उसका मुकाबला कर पाते हैं।
4. प्रेम से प्रेरणा की प्राथमिकताओं को प्रकट करता है।
5. यह जीवन की प्राथमिकताओं को प्रकट करता है।
6. भण्डारी का अपना कुछ नहीं। वह अपने स्वामी की सम्पत्ति की चिन्ता करता है। स्वामी उसकी चिन्ता करता है।
7. यह हमारे व्यवहार को बदलेगा। सब से अधिक हम परमेश्वर के राज्य की खोज में रहें।

स्व-परीक्षा 8

1. मानव आत्मा क्षमा की आत्मा नहीं, इसलिये क्षमा करने के लिये हमें परमेश्वर की सहायता चाहिये।
2. परमेश्वर का राज्य धार्मिकता, शांति और आनन्द है जो पवित्रात्मा देता है। राज्य का होना क्षमा की क्षमता है।
3. सब चीज़ों से अधिक परमेश्वर के राज्य की चिन्ता करना।
4. खुद इंकारी
5. उसके लिये क्या गलत और क्या सही है के अनुसार।
6. कुल, जाति, अहं, देश धर्म (किसी भी क्रम में)
7. यीशु को अपने जीवन के केन्द्र में रखें कि वह हमारे बोझ बांटे

स्व-परीक्षा 9

1. विश्वासी को पवित्रात्मा की सहायता है।
2. परीक्षा हुई
   दूर खिंच गया
   लालसा
   प्रलोभन

3. वे उसके साथ रहते हैं परन्तु उस को उनके सही प्रयोग के लिये सामर्थ मिली है।
4. प्रार्थना व आराधना।
5. प्रार्थना युद्ध की तैयारी है।
6. प्रेम, पवित्रता और प्रेम का व्यक्ति।
7. प्रार्थना व आराधना में स्वयं को परमेश्वर के लिये प्रस्तुत करना।
8. हम आत्मा द्वारा परिवर्तित हैं, हम स्वयं नहीं बदलते।
9. क्योंकि ज़रूरी नहीं कि वह प्रेम से प्रेरित हो।

स्व-परीक्षा 10

1. बार बार परमेश्वर से बातें करें और निश्चित करें कि हमारी और उसकी इच्छा समान हैं।
2. यह सब भय देर करता है।
3. जहां परमेश्वर का प्रेम नहीं वहां दुखदाई भय होता है।
4. मृत्यु, बीमारी, गरीबी।
5. यीशु को जानना और परमेश्वर के राज्य को सबसे पहले रखना।
6. परमेश्वर से दूर होना।
7. सब चीज़ों से ज़्यादा परमेश्वर के राज्य की चिन्ता करना, और कि वह आप से क्या चाहता है और वह आपको आपकी ज़रूरतें प्रदान करेगा।

मसीही सेवा कार्यक्रम

बांयी ओर का चिन्ह आई.सी.आई. मसीही सेवा कार्यक्रम में क्रम को दर्शाता है। इस कार्यक्रम में 18 पाठ्यक्रम (विषय) है और यह तीन इकाईयों में बटा हैं, प्रत्येक में छः पाठ्यक्रम है।

प्रार्थना व आराधना इकाई II का पाठ्यक्रम I है। सही क्रम में पाठ्यक्रमों का अध्ययन सहायक होगा।

यह पाठ्यक्रम से आपका सहायता मिलेगी . . .

- प्रार्थना का अर्थ व उद्देश्य समझने में।
- परमेश्वर से बातचीत करना सीखना, और उसकी कैसे सुनने में।
- आराधना में परमेश्वर के नमूने का अनुसरण करने में।
- परमेश्वर की इच्छा पूरी करने में आनन्द।

आई.सी.आई मसीही सेवा कार्यक्रम में दूसरे शीर्षक हैं

आत्मिक वरदान

मसीही परिपक्वता

बाइबल को समझना

इन या दूसरे आई.सी.आई. पाठ्यक्रमों को प्राप्त करने के लिए अपने आई.सी.आई. प्रतिनिधि से सम्पर्क करें।